अनुक्रमांक ..... मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 12

नाम.....

102 304 (AE)

साहित्यिक हिंदी

2022

साहित्यिक हिंदी
2022

समय : तीन घंटे 15 मिनट *[पूर्णांक :100*

निर्देश :

I. प्रारंभ 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र पढ़ने के लिए निर्धारित है।

II. इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं । दोनों खंडों के प्रश्न करना आवश्यक है ।

III.

क

1. (क) 'अगहन महात्म्य' के लेखक हैं- 1

(i) बैकुंठमणि शुक्ल
(ii) सदासुखलाल
(iii) सदल मिश्र
(iv) इंशाअल्ला खाँ ।

(ख) 'प्रेमघन' किस युग के लेखक थे ? 1

(i) भारतेन्दु युग के
(ii) द्विवेदी युग के
(iii) छायावादी युग के
(iv) प्रगतिवादी युग के ।

(ग) श्यामसुन्दर दास ने लिखा है- 1

(i) साहित्यालोचन
(ii) हिंद्री आलोचना
(iii) सूर साहित्य
(iv) व्यंग्यात्मक निबन्ध ।

(घ) किसकी कविताओं में दु:खवाद की प्रधानता है? 1

(i) माखललाल चतुर्वेदी की
(ii) पाण्डेय बेचन शर्मा ' उग्र ' की
(iii) निराला की
(iv) महादेवी वर्मा की ।

(ङ) अज्ञेय जी ने तार सप्तक का सम्पादन किया - 1

(i) द्विवेदी युग में
(ii) शुक्ल युग में
(iii) शुक्लोत्तर युग में
(iv) प्रयोगवादी युग में ।

2. (क) निम्न में से शब्द शक्ति नहीं है – 1

(i) अभिधा
(ii) लक्षणा
(iii) व्यंजना
(iv) प्रसाद ।

99/100

खण्ड – क

प्रश्नोत्तर सं॰ – 1

(क) (i) वैकुण्ठमणि शुक्ल 1

(ख) (i) भारतेन्दु युग 1

(ग) (i) साहित्यालोचन 1

(घ) (iv) महादेवी वर्मा की 1

(ङ) (iv) प्रयोगवादी युग में । 1

(ख) ' बनो संसृति के मूल रहस्य ' किसकी पंक्ति है ? 1

(i) भारतेन्दु की

(ii) जयशंकर प्रसाद की

(iii) सुमित्रानन्दन पन्त की

(iv) महादेवी की ।

(ग) ' परमाल रासो ' के रचयिता हैं – 1

(i) नरपति नाल्ह

(ii) दलपति विजय

(iii) चन्दबरदाई

(iv) जगनिक ।

(घ) छायावाद काल से सम्बन्धित है - 1

(i) मतिराम

(ii) केशवदास

(iii) नागार्जुन

(iv) सुमित्रानन्दन पन्त

(ङ) 'मंझन' किस काव्यधारा के कवि हैं ? 1

(i) कृष्ण काव्यधारा के

(ii) सूफी काव्यधारा के

(iii) वीर काव्यधारा के

(iv) राम काव्यधारा के ।

(2)

प्रश्नोत्तर सं० – 2

(क) (iv) प्रसाद

(ख) (ii) जयशंकर प्रसाद

(ग) (iv) जगनिक

(घ) (iv) सुमित्रानन्दन पंत

(ङ) (ii) सूफी काव्यधारा के

3. निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिये -

जन का प्रवाह अनन्त होता है। सहस्रों वर्षों साथ राष्ट्रीय जन ने तादात्म्य प्राप्त किया है सूर्य की रश्मियाँ नित्य प्रातःकाल भुवन को भर देती तब तक राष्ट्रीय जन का जीवन भी अ भी अनेक उतार - चढ़ाव पार करने के बाद भी निवासी जन नयी उठती लहरों से आगे बढ़ने के अजर - अमर हैं। जन का संततवाही जोवन नदी के प्रवाह की तरह है, जिसमें कर्म और श्रम के उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना होता है।

i. उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक तथा लेखक का नाम लिखिए।
ii. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
iii. राष्ट्रीय जन का जीवन कब तक अमर रहेगा ?
iv. जन का सततवाही जीवन किसके समान है ?
v. उत्थान के घाटों का निर्माण किसके द्वारा होगा।

अथवा

संस्कृति के अभ्युदय और विकास के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि संभव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ - साथ जन की संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिये जायँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्पं संस्कृति है। संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है। ज्ञान और कर्म दोनों के पारस्परिक प्रकाश की संज्ञा संस्कृति है।

क. किसके द्वारा राष्ट्र की वृद्धि संभव है?
ख. यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिये जायँ तो क्या होगा?
ग. गद्यांश के अनुसार संस्कृति क्या है ?
घ. जीवन के विटप का पुष्प क्या है ?
ङ. पाठ का नाम व लेखक का नाम लिखो?

प्रश्नोत्तर सं० – 3

संकेत — जन का प्रवाह ..... निर्माण करना होता है।

(i) पाठ का शीर्षक — राष्ट्र का स्वरूप
लेखक का नाम — वासुदेवशरण अग्रवाल

(ii) रेखांकित अंश — जन का प्रवाह ..... जीवन भी अमर है।
व्याख्या :— लेखक के अनुसार, राष्ट्र के जनों का प्रवाह अन्तहीन है। मनुष्य पीढ़ी दर पीढ़ी अपने राष्ट्र के साथ जुड़ा रहता है, इसीकारण हजारों वर्षों से मनुष्य ने अपनी भूमि के साथ तादात्म्य स्थापित किया है हुआ है तथा विभिन्न दृष्टियों से एकरूपता बनाई हुई है। जब तक राष्ट्र रहेगा उसकी प्रगति रहेगी, जन का जीवन भी रहेगा।

(iii) जब तक सूर्य की रश्मियाँ नित्य प्रातःकाल भुवन को अमृत से भरती रहेंगी तब तक राष्ट्रीय जन का जीवन भी अमर रहेगा।

(iv) नदी के प्रवाह के समान है।

(v) कर्म और श्रम के द्वारा उत्थान के घाटों का निर्माण होता है।

4. दिए गए पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

मारग प्रेम को को समुझे ' हरिश्चन्द्र ' यथारथ होत यथा है।
लाभ कछू न पुकारन में बदनाम ही होन की सारी कथा है। जानत है जिय मेरो भलीबिधि औरु उपाइ सबै बिरथा है।
बावरे हैं ब्रज के सिगरे मोहि नाहक पूछत कौन विथा है॥

i. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक तथा रचयिता का नाम लिखिए।
ii. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
iii. बदनाम होने का क्या कारण है ?
iv. बावरे कौन हैं और क्या पूछते हैं ?
v. ' बावरे ' तथा ' सिगरे ' शब्द का अर्थ लिखिए।

अथवा

दुःख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात :
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप , जगत की ज्वालाओं का मूल :
ईश का वह रहस्य - वरदान कभी मत इसको जाओ भूल॥

i. प्रस्तुत पंक्तियों में किन दो पात्रों के बीच वार्तालाप हो रहा है ?
ii. ईश्वर का रहस्यमयी वरदान क्या है ?
iii. प्रस्तुत पंक्तिया कौन कह रहा है ?
iv. पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए|
v. सुख का नवीन प्रभात कब आता है ?

प्रश्नोत्तर सं० – 4

संकेत — दुःख की ---------- इसकी जाओ भूल ॥

(i) प्रस्तुत पंक्तियों में कामायनी के दो प्रमुख पात्र श्रद्धा एवं मनु के बीच वार्तालाप चल रहा है। 2

(ii) ईश्वर का रहस्यमयी वरदान दुःख है। 2

(iii) प्रस्तुत पंक्तियाँ श्रद्धा कह रही है। 2

(iv) सन्दर्भ :–
प्रस्तुत पद्यांश 'कामायनी' के 'श्रद्धा' सर्ग से उद्धृत हमारी पाठ्य-पुस्तक 'काव्यांजलि' में 'श्रद्धा-मनु' नामक शीर्षक से संकलित हैं इसके रचयिता 'जयशंकर प्रसाद' जी हैं। 2

(v) दुःखरुपी रजनी की समाप्ति पर सुख रुपी नवीन प्रभात आता है। 2

5. क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक की जीवनी , साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए :
   i) वासुदेवशरण अग्रवाल
   ii) डॉ ० ए ० पी ० जे ० अब्दुल कलाम
   iii) हजारी प्रसाद द्विवेदी

   ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए :
   i) भारतेंदु हरिश्चंद
   ii) जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'
   iii) सच्चिदानन्द होरानन्द 'वात्स्यायन' ।

6. कहानी - तत्त्वों के आधार पर ' पंचलाइट ' अथवा ' कर्मनाशा की हार ' कहानी की समीक्षा कीजिए।
   अथवा ' बहादुर ' अथवा ' कर्मनाशा की हार ' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्डकाव्य के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए :
   क) ' रश्मिरथी ' खण्डकाव्य के आधार पर ' कर्ण ' की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
   अथवा ' रश्मिरथी ' खण्डकाव्य की किसी प्रमुख घटना का उल्लेख कीजिए।
   ख) " सत्य की जीत ' खण्डकाव्य की मुख्य विशेषताओं का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए|
   अथवा ' सत्य की जीत ' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र - चित्रण कीजिए।
   ग) ' त्यागपथी ' खण्डकाव्य का नायक कौन है ? उसका चरित्र चित्रण कीजिए।
   अथवा ' त्यागपथी ' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
   घ) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
   अथवा ' मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य को कथावस्तु संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।
   ङ) ' आलोक वृत्त ' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग ' असहयोग आन्दोलक ' का कथानक लिखिए।
   अथवा ' आलोक वृत्त ' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
   च) ' श्रवणकुमार ' खण्डकाव्य के ' अभिशाप ' सर्ग की कथावस्तु लिखिए।
   अथवा ' श्रवणकुमार ' खण्डकाव्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

प्रश्नोत्तर सं० -5

(क) लेखक की जीवनी, साहित्यिक परिचय

(iii) डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

जीवन-परिचय :—

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 ई० को बलिया जिले के दुबे के छपरा नामक ग्राम में हुआ था। पिता का नाम अनमोल द्विवेदी, माता का नाम ज्योतिष्मती था। द्विवेदी जी सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनके बचपन का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी था।

18 मई सन 1979 ई० को हिंदी का यह महान पुत्र पंचतत्व में लीन हो गया।

साहित्यिक-परिचय :—

आ० द्विवेदी जी का हिंदी साहित्य के अन्तर्गत आलोचना तथा निबन्ध के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान है। 1930 ई० में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि तथा 1949 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय से डी.लिट. की उपाधि प्राप्त की। कई विभागों के अध्यक्ष एवं प्रमुख रहे।

कृतित्व :—

- आलोचनात्मक कृतियाँ —
  (1) सूर साहित्य
  (2) हिन्दी साहित्य की भूमिका
  (3) प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद
  (4) कबीर
  (5) नाथ सम्प्रदाय
  (6) कालिदास की लालित्य योजना
  (7) हिन्दी साहित्य का उद्भव एवं विकास

- निबन्ध संग्रह —
  कल्पलता, अशोक के फूल, कुटज, विचार और वितर्क, विचार प्रवाह।

- उपन्यास —
  बाणभट्ट की आत्मकथा
  अनामदास का पोथा
  पुनर्नवा
  चारुचन्द्र लेख

प्रश्नोत्तर सं - 5

(ब) कवि की जीवनी एवं साहित्यिक परिचय

(i) भारतेंदु हरिश्चंद्र

जीवन परिचय —

भारतेंदु जी का जन्म काशी के प्रसिद्ध वैश्य परिवार में सन 1850 ई० में हुआ था। पिता गोपालचंद गिरिधरदास ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि थे। 7 वर्ष की उम्र में भारतेंदु जी ने एक दोहा लिख डाला था। तब पिता जी ने इन्हें महाकवि होने का आशीर्वाद दिया था। बचपन में ही माता-पिता छोड़कर चले गये। भारतेंदु जी शोषितों और वंचितों की आवाज को अपने काव्य के माध्यम से उठाते रहे अल्पायु में ही मात्र 35 वर्ष की अवस्था में सन 1885 ई० में भारतेंदु जी इस असार संसार से विदा हो गए। ऐसे कालजयी रचनाकारों को हिन्दी साहित्य संसार कभी नहीं भूलेगा।

साहित्यिक परिचय :—

भारतेंदु जी के वृहत योगदान के कारण ही सन 1857 से 1900 ई० के मध्य समय को भारतेंदु युग के नाम से जाना गया। 18 वर्ष की अवस्था में भारतेंदु जी ने कविवचन सुधा नाम की पत्रिका निकाली। बीस वर्ष की अवस्था में आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाए गए। तदीय समाज की स्थापना की थी।

अतः भारतेंदु जी एक सफल नाटककार, प्रतिष्ठित सम्पादक और महान कवि के रूप में उपस्थित हुए।

प्रमुख कृतियाँ :— प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार है —

1. वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति
2. सत्य हरिश्चंद
3. भारत दुर्दशा
4. नील देवी
5. प्रेम जोगिनी
6. विद्या सुंदर
7. भारत जननी
8. मुद्राराक्षस
9. कालचक्र
10. प्रेमाधुरी एवं प्रेममालिका।

6. कहानी - तत्त्वों के आधार पर ' पंचलाइट ' अथवा ' कर्मनाशा की हार ' कहानी की समीक्षा कीजिए।
अथवा ' बहादुर ' अथवा ' कर्मनाशा की हार ' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्डकाव्य के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए :

क) ' रश्मिरथी ' खण्डकाव्य के आधार पर ' कर्ण ' की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
अथवा ' रश्मिरथी ' खण्डकाव्य की किसी प्रमुख घटना का उल्लेख कीजिए।

ख) " सत्य की जीत ' खण्डकाव्य की मुख्य विशेषताओं का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।
अथवा ' सत्य की जीत ' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र - चित्रण कीजिए।

ग) ' त्यागपथी ' खण्डकाव्य का नायक कौन है ? उसका चरित्र चित्रण कीजिए।
अथवा ' त्यागपथी ' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

घ) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
अथवा ' मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य को कथावस्तु संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

ङ) ' आलोक वृत्त ' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग ' असहयोग आन्दोलक ' का कथानक लिखिए।
अथवा ' आलोक वृत्त ' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

च) ' श्रवणकुमार ' खण्डकाव्य के ' अभिशाप ' सर्ग की कथावस्तु लिखिए।
अथवा ' श्रवणकुमार ' खण्डकाव्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

प्रश्नोत्तर सं० - 6

'बहादुर' के प्रमुख पात्र 'बहादुर' का चरित्र-चित्रण

अमरकान्त जी द्वारा लिखी कहानी 'बहादुर' का प्रमुख पात्र 'बहादुर' है, जिसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं —

(1) छल-कपट रहित :—
बहादुर छल कपट से रहित भोला बालक है, जिसकी आयु लगभग 12-13 वर्ष है। बहादुर एक नेपाली लड़का है।

(2) परिश्रमी, हँसमुख एवं मृदुभाषी :—
बहादुर हर समय हँसते रहता है, जिससे भी बोलता है तो बड़ी नम्रता एवं मृदुता के साथ। वह अत्याधिक परिश्रमी है, पूरे घर के सदस्यों का काम अधक करता है।

(3) सहनशील, ईमानदार एवं सच्चे हृदय वाला :—

बहादुर सत्य हृदयी है, वह ईमानदार होने के साथ साथ सच्चे मन वाला बालक है। किशोर उससे कई बार बदसलूकी करता है परन्तु वह थोड़ी ही देर में भुला देता है। लेकिन जब उसे बाप की गाली देता है, तो बहादुर का स्वाभिमान जाग जाता है।

(4) मातृ-पितृ भक्त :—

बालक बहादुर अपने माता पिता के प्रति भक्ति भावना रखता है। अपने कमाए पैसे माँ को ही देना चाहता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बहादुर एक व्यवहार कुशल, सेवी एवं ईमानदार बालक है। उसका चरित्र पाठक को अपनी ओर आकर्षित करता है।

प्रश्नोत्तर सं० - 7

(क)

[रश्मिरथी खण्डकाव्य]

कर्ण का चरित्र चित्रण

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी द्वारा रचित खण्डकाव्य 'रश्मिरथी' का प्रमुख पात्र कर्ण है, जिसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं :—

(1) साहसी और वीर योद्धा :—

खण्डकाव्य के प्रारम्भ में ही कर्ण हमें वीर योद्धा के रूप में दिखायी देता है। वह शस्त्र विद्या प्रदर्शन के समय अर्जुन को ललकारता है, तो सभी स्तब्ध रह जाते हैं।

(2) सच्चा मित्र —

कर्ण वीर योद्धा होने के साथ ही सच्चा मित्र भी है, दुर्योधन को अपना सच्चा मित्र मानता है, जिसके लिये वह अपने प्राणों की बाजी भी लगायेगा।

(3) परम दानवीर :—

कर्ण की दानवीरता का लोहा, दुनिया आज भी मानती है, कि इन्द्र जैसे छलिया के ब्राह्मण वेश में पहचानने के बावजूद उसे अपने कवच और कुण्डल दान कर देता है।

(4) महान सेनानी :—

कर्ण दानवीर, शूरवीर एवं महान सेनानी भी है। वह शर शैया पर लेटे भीष्म से युद्ध हेतु आशीर्वाद लेने जाता है, भीष्म उसके विषय में कहते हैं—

"अर्जुन को मिले कृष्ण जैसे,
तुम मिले कौरवों को वैसे॥"

(5) उत्कृष्ट चरित्र :—

सम्पूर्ण खण्डकाव्य में सबसे उत्कृष्ट चरित्र कर्ण का है, उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर कह सकते हैं कि कर्ण, महादानी, महावीर, महामित्र के रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है।

(खण्ड - ख)

8. निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) अतीते प्रथमकल्पे चतुष्पदाः सिंहं राजानमकुर्वन्। मत्स्या आनन्दमत्स्यं, शकुनयः सुवर्णहंसम्। तस्य पुनः सुवर्णराजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती आसीत्। स तस्यै वरमदात् यत् सा आत्मनश्चित्तरुचितं स्वामिनं वृणुयात् इति। हंसराजः तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसङ्के संन्यपतत्। नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन्। हंसराजः आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकं आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेश।

अथवा

सा मैत्रेयी उवाच – येनाहं नामृतां स्याम् किमहं तेन कुर्याम् यदेव भगवान् केवलममृतत्वसाधनं जानाति नदेव मे ब्रूहि। याज्ञवल्क्य उवाच प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे। एहि, उपविश, व्याख्यास्यामि ते - अमृतत्त्व साधनम्।

(ख) निम्नलिखित अवतरणों का सन्दर्भ - सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

अथवा

प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रो,
यद् भर्तुरेव हितमिच्छति तत् कलत्रम्|
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यद्
एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते||

9. निम्न संस्कृत प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए-

(i) रूपवती हंस पोतिका कस्य दुहिता आसीत्?
(ii) संस्कृत साहित्यस्य आदिकविः कः आसीत्?
(iii) का भाषा देवभाषा इति ज्ञाता?
(iv) मत्स्या कि नाम आसीत ?

खण्ड – ख

प्रश्नोत्तर सं – 8

(क)

संकेत – सा मैत्रेयी उवाच - ..... अमृतत्व साधनम् ।

सन्दर्भ :—
प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश 'सस्कृत-दिग्दार्शिका' नामक हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः' नामक पाठ से उद्धृत है।

हिन्दी अनुवाद :—
वह मैत्रेयी बोली- जिससे मैं अमर न हो सकूँगी उसका मैं क्या करूँगी। भगवन् आप जो अमरता का साधन जानते हैं वही केवल बताइये। याज्ञवल्क्य ने कहा 'तुम मेरी प्रिया हो, प्रिय बोल रही हो।' आओ, बैठो, मैं तुमसे अमृतत्व के साधन की व्याख्या करूंगा।

प्रश्नोत्तर सं० – 8

(ख)

संकेत — निन्दन्तु नीति निपुणा - ..... पदं न धीराः ॥

संदर्भ :—
प्रस्तुत संस्कृत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दार्शिका' के 'सुभाषितरत्नानि' नामक पाठ से अवतरित है।

हिंदी अनुवाद :—
नीति में निपुण लोग चाहे निंदा करें या प्रशंसा करें। लक्ष्मी आये अथवा इच्छानुसार चली जाए। आज ही मरण हो अथवा युगों पश्चात हो परन्तु धैर्यवान लोग न्यायमार्ग से अपने कदम नहीं हटाते हैं।

प्रश्नोत्तर सं० – 9

(ii) संस्कृत साहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः आसीत्। 1
(iii) संस्कृतभाषा देवभाषा इति ज्ञाता। 1

10. क) वीभत्स रस अथवा करुण रस की परिभाषा लिखकर उसका एक उदाहरण लिखिए।
ख) रूपक अथवा सन्देह अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।
ग) रोला अथवा कुण्डलिया छन्द का लक्षण उदाहरण सहित लिखिए।

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :
i) पर्यावरण प्रदूषण: कारण , निवारण
ii) भारतीय समाज में नारी का स्थान
iii) योग शिक्षा की आवश्यकता
iv) चाँदनी रात में नौका विहार
v) जनसंख्या वृद्धि : कारण और निवारण

12. क) i) ' पवित्रम् ' का सन्धि - विच्छेद है
अ) पौ + इत्रम्
ब) पो + इत्रम्
स) पव + इत्रम्
द) पवित्रम्।

ii) ' उड्डीयते' का सन्धि विच्छेद है –
अ) उत + दीयते
ब) उत + डीयते
स) उत् + डीयते
द) उद + डीयते

प्रश्नोत्तर सं – 10

(क) करुण रस –

परिभाषा :—
इष्ट विनाश, बन्धु विनाश के कारण जब 'शोक' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भावों द्वारा पुष्ट होता है तब वीं करुण रस की निष्पत्ति होती है।

उदाहरण :—
शोक विकल रोवहिं सब रानी।
रूप सील गुन ज्ञान बखानी॥
करहिं विलाप अनेक प्रकारा।
गिरहिं श्रमित्तल बारहिं बारा॥

स्पष्टीकरण :— स्थायी भाव — शोक
विभाव — आलम्बन — दशरथ का शव
आश्रय — रानियाँ एवं दर्शक सभा
अनुभाव — अश्रु प्रवाह, स्वेद, सरपटकना, छाती पीटना। श्रमि पर गिरना।
संचारी भाव— जड़ता, दैन्य, मति, रोमाँचकता, मूर्छा।

प्रश्नोत्तर सं० - 10

(ख) रुपक अलंकार

परिभाषा :—
जहाँ उपमेय में उपमान का भेदरहित आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

2

उदाहरण :—
चरन-कमल बंदौं हरि राई।

उपर्युक्त पंक्ति में चरण (उपमेय) में कमल (उपमान) का भेदरहित आरोप है।

(ग) रोला छंद

लक्षण :—
यह एक सममात्रिक छंद है, इसमें 24 मात्राएं होती हैं 11, 13 पर यति होती है। इसमें चार चरण होते हैं।

उदाहरण —
जीती जाती हुई, जिन्होंने भारत बाजी।
S S S S I S, I S S S I I S S
निजबल से बल मेट विधर्मी मुगल कुराजी॥
I I I I S I I S I, I S S I I I I S S

1½

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

i) पर्यावरण प्रदूषण: कारण , निवारण
ii) भारतीय समाज में नारी का स्थान
iii) योग शिक्षा की आवश्यकता
iv) चाँदनी रात में नौका विहार
v) जनसंख्या वृद्धि : कारण और निवारण

9

12. क) i) ' पवित्रम् ' का सन्धि - विच्छेद है

अ) पौ + इत्रम्
ब) पो + इत्रम्
स) पव + इत्रम्
द) पवित्रम् ।

ii) ' उड्डीयते' का सन्धि विच्छेद है –

अ) उत + दीयते
ब) उत + डीयते
स) उत् + डीयते
द) उद + डीयते

प्रश्नोत्तर सं० — 11

(v) निबंध : जनसंख्या वृद्धि : कारण, निवारण

रुपरेखा : —

(i) प्रस्तावना
(ii) भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण
(iii) नियंत्रण के उपाय
(iv) उपसंहार ।

2

(i) प्रस्तावना :—

भारत जैसे विशाल देश में जनसंख्या वृद्धि विशाल रुप ले रही है। 'जनसंख्या' का शाब्दिक अर्थ लोगों की संख्या है। लोगों की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि ही जनसंख्या वृद्धि कहलाती है, जनसंख्या के कारण एवं निवारण निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट है —

(ii) भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण :—

भारत में उत्तरोत्तर जनसंख्या वृद्धि हो रही है, यह विषय चिंतनीय है, इसके कारणों को अग्रलिखित बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट किया गया है —

(क) ऊँची जन्मदर —
भारत की जलवायु गर्म है, लड़के, लड़कियां जल्द ही वयस्क हो जाते हैं, जिसके चलते जल्दी विवाह और संतानोत्पत्ति भी जल्द ही करते हैं।

(ख) मृत्युदर में गिरावट —
भारत में जन्म अधिक और मृत्यु कम हैं। इसी कारण भारत में जनसंख्या बढ़ रही है।

(ग) अशिक्षा एवं निर्धनता —
भारत में अशिक्षित व्यक्तियों की संख्या अधिक होने के कारण उनको परिवार नियोजन के उपायों के बारे में ज्ञान नहीं है। निर्धनता के कारण परिवार नियोजन में खर्चे का भी डर है।

(घ) अधिक प्रजनन क्षमता —
भारत की महिलाओं में प्रजनन क्षमता अधिक है, जिसके चलते उत्तरोत्तर बच्चों की पैदावार हो रही है।

(ङ) अन्धविश्वास —
भारत में अंधविश्वासी बहुत हैं, वे संतानोत्पत्ति को भगवान की देनी समझते हैं, और निरन्तर जनसंख्या वृद्धि में योगदान देते रहते हैं।

(च) शरणार्थियों का आगमन —
अन्य देशों से आकर लोग अपने देश में आकर बस गए, उनकी संख्या भी अपने भारत में सम्मिलित हो गयी।

(iii) नियंत्रण के उपाय :—
भारत में जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के उपाय अग्रलिखित हैं —

(क) शिक्षा का विस्तार —
शिक्षा का अत्याधिक विस्तार किया जाये, शिक्षित व्यक्ति यह समझ सकते हैं कि शिक्षा की स्थिति के अनुसार जनसंख्या नियंत्रित की जा सकती है।

(ख) परिवार नियोजन —
परिवार नियोजन के समुचित उपायों को अपनाकर, जनसंख्या को नियंत्रित किया जा सकता है। नसबंदी को बढ़ावा दिया जाये, जिसमें प्रमुख रूप से पुरुष नसबंदी।

(ग) परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रचार प्रसार —
परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रचार प्रसार किया जाना चाहिये। परिवार कल्याण कार्यक्रमों की उचित जानकारी से जनता जनसंख्या वृद्धि की स्थिति को कम करेगी।

(घ) सीमित दाम्पत्य परिवारों को पुरस्कृत करना :—

भारत में जिनके परिवार सीमित है. उनपरिवारों के दम्पात्तियों को पुरस्कृत करना चाहिए. जिससे अन्य दम्पात्ति भी अभिप्रेरित हों।

(iv) **उपसंहार** :—

इस प्रकार भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण एवं निवारण के बारे में चर्चा की गयी। परिणाम-स्वरुप निष्कर्षरुप में यह कहा जा सकता है, कि हमें एवं हमारी सरकार दोनों को सचेत होना होगा तभी हम जन-संख्या वृद्धि को रोक सकते हैं। जनसंख्या पर नियंत्रण करके ही भारत देश को विकासित देशों की श्रेणी में लाया जा सकता है।

82

12. क) i) ' पवित्रम् ' का सन्धि - विच्छेद है

अ) पौ + इत्रम्

ब) पों + इत्रम्

स) पव + इत्रम्

द) पवित्रम्।

ii) ' उड्डीयते' का सन्धि विच्छेद है –

अ) उत + दीयते

ब) उत + डीयते

स) उत् + डीयते

द) उद + डीयते

प्रश्नोत्तर सं० -12

(क)

(i) (ब) पो + इत्रम्

(ii) (स) उत् + डीयते

(iii) (स) उत् + लेख

(ख)

(i) (ब) अव्ययी भाव

(ii) (स) कर्मधारय

iii) ' उल्लेख ' को सन्धिविच्छेद है

अ) उल् + लेख

ब) उद + लेख

स) उत् + लेख

द) उत + लेख

ख) i) ' प्रतिक्षणम्' में समास है –

अ) द्वन्द्व

ब) अव्ययीभाव

स) कर्मधारय

द) बहुव्रीहि ।

ii) ' निलाम्बुजम्' में समास है

अ) द्विगु

ब) तत्पुरुष

स) कर्मधारय

द) अव्ययीभाव

13. क i) 'नाम्ना' रूप है नाम शब्द का –

अ) द्वितीया विभक्ति एकवचन

ब) तृतीया विभक्ति , एकवचन

स) पंचमी विभक्ति एकवचन

द) षष्ठी विभक्ति एकवचन

ii) ' आत्मभ्य:' रूप आत्मन् (पुंल्लिंग) शब्द का -

अ) तृतीया विभक्ति , द्विवचन

ब) चतुर्थी विभक्ति ,बहुवचन

स) षष्ठी विभक्ति , बहुवचन

द) सप्तमी विभक्ति , बहुवचन ।

ख) ' तिष्ठति' अथवा ' पिबति' का धातु , लकार ,पुरुष तथा वचन लिखिए ।

ग) i) 'गतवान्' शब्द में प्रत्यय है

अ) तल्

ब) त्व

स) मतुप

द) वतुप

ii) 'मत्वा' शब्द में प्रत्यय है -

अ) अनीयर

ब) क्त्वा

स) कृत

द) क्त ।

घ) निम्नलिखित रेखांकित पदों में से किसी एक पद प्रयुक्त विभक्ति तथा उससे सम्बन्धित नियम का उल्लेख कीजिए :

i) विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति ।

ii) मोहनः पादेन खंजः अस्ति ।

iii) रामो5पि त्वया सह गच्छति ।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

i) वह वाराणसी गया ।

ii) मैं कल जाऊँगा ।

iii) कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं ।

iv) गांव में बालक निवास करते हैं ।

प्रश्नोत्तर सं० – 13.

(क)

(i) (ब) तृतीया एकवचन (ii) (ब) चतुर्थी बहुवचन

(ख)

तिष्ठति = 'स्था' धातु
लट लकार
प्रथम पुरुष
एक वचन

(ग)

(i) (द) वतुप (ii) (ब) क्त्वा

(घ)

(ii) मोहनः पादेन खञ्जः अस्ति ।
नियम – 'येनाङ्गविकारः' सूत्र से तृतीया वि० है।
करण कारक है।

प्रश्नोत्तर सं० - 14.

(i) सः वाराणसीं अगच्छत् ।

(ii) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः आस्ति ।

Roll. No. — 0123456